शहर को और भी वहुत कुछ चाहिए

धूप छेकती अट्टालिकाओं
तेज दौड़ती कारें
बाप को धता बताकर
झाड़ियों के मध्य बैठे लड़के-लड़कियों
सपने बेचते दुकानदार
दुआएं देते भिखारियों
नौकरों को फटकारते मालिक
डंडे बरसाती पुलिस
नारों और पोस्टरों से अटी पड़ी दीवारों
कम्प्यूटरों से परिचालित कारखानों के अलावा
शहर को और भी बहुत कुछ चाहिए.....
बूढ़ा और घना होता बरगद
मैदान में लहराते बच्चे
दुपट्टे ठीक करती नवयौवना
आज्ञा बजा लाते युवक
सुकोमल कवि
ईमानदार अफसर
और कुछ संवेदनशील लोग
शहर को और भी बहुत कुछ चाहिए ..... ।

- अलख निरंजन कुशवाहा -
488, माधोपुर
मुंगेर - 811201
(बिहार)